Vol. 10, Issue: 09, Sept.: 2021
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

कोविड–19 के बाद ऑनलाइन शिक्षा में बढ़ते अवसर और मुश्किलें

डॉ. बीना यादव
एसोसिएट प्रोफेसर
बी.एड.विभाग
खुन–खुन जी गर्ल्स डिग्री कॉलेज लखनऊ

सारांश

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, और आज कोविड–19 महामारी के कारण पूरा संसार एक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। महामारी के इस संकट ने शिक्षा का पूरा परिदृश्य ही बदल डाला है। इसके कारण हमारी पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था भी परिवर्तित हो कर ऑनलाइन शिक्षा के रूप में दिखाइ दे रही है। देश में डिजिटल शिक्षा का चलन तेजी से बढ़ रहा है, जो आज के समय की मांग भी है। हमारी शिक्षा प्रक्रिया में बदलाव देखने को मिल रहे है, जो इस प्रक्रिया को सरल और रोचक बना रहे है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली हमें जहां एक ओर नए–नए अवसर प्रदान कर रही है, वही दूसरी ओर इन अवसरों को प्राप्त करने के लिए समस्त शिक्षण समुदाय (शिक्षक, छात्र, अभिभावक) को अनेक मुश्किलों का भी सामना करना पड़ रहा है। जो ऑनलाइन शिक्षा के मार्ग में एक चुनौती के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है। मुश्किलों के रूप में तमाम अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर भविष्य के गर्भ में छिपे हुए है, जिनका उत्तर मिलना अभी शेष है। यदि हम इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढ लेते है, तो निश्चिय ही ऑनलाइन शिक्ष हम सभी के लिए पारम्परिक शिक्षा का मात्र विकल्प न होकर एक वरदान साबित होगी। कहते है कि विशेष परिस्थितियाँ सदैव ही अति विशिष्ट निर्णयों की मांग करती रही है। ब्यापक छात्र हित में आने वाले समय में हम कुछ ऐसे ही निर्णयों के साक्षी बनेगे।

सूचक शब्द : *कोविड–19 महामारी, पारम्परिक शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षा, प्रौद्यागिकी, उपलब्ध नए–नए अवसर, बढ़ती मुश्किलें*

1. एक परिचय

आज यदि हम पूरे संसार पर एक दृष्टि डाले, तो पूरा संसार एक अदृश्य वायरस के प्रकोप से त्रस्त दिखाई दे रहे है। जीवन के सभी क्षेत्र में इसके प्रभाव दिखाई दे रहे है। सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और धार्मिक कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं जो कोविड से प्रभावित न हुआ हो। इस बीच ऐसा लगता है जैसे संसार की सारी प्रगति रूक सी गई हो। ऐसे बदलते परिवेश में शिक्षा व्यवस्था में भी काफी बदलाव होते नज़र आ रहे है। महामारी के चलते सभी शिक्षण संस्थाए अचनाक बंद कर दी गई, ताकि कोविड संक्रमण से बचाव हो सके। इसके बाद तमाम संस्थानों ने शिक्षण के लिए इंटरनेट की सहायता से गूगल मीट, जूम आदि का उपयोग करते हुए छात्रों को उनके घर पर शिक्षण देने का सराहनीय प्रयास किया।

भारत में आदि काल से ही पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था प्रचलित रही है। जिसमें गुरू शिष्य सशरीर उपस्थित रहते है। अध्यापन कार्य शिक्षक मौखिक रूप से ब्लैक–बोर्ड और चाक की सहायता से करते है, और आज ऑनलाइन शिक्षा का विचार कोई नया नहीं है। दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में भारत में इसका प्रयोग पहले से ही चला आ रहा है। तकनीकी पर आधारित दूरस्त शिक्षा के विकास की चार अवस्थाए है, जिन्हें हम इसकी चार पीढ़िया भी कह सकते है। दूरस्त शिक्षा की पहली पीढ़ी (1840–1970) पत्राचार शिक्षा के रूप में थी। इसकी दूसरी पीढ़ी (1970–1990) को मुक्त शिक्षा कहा जाने लगा। और तीसरी पीढ़ी (1990) के पश्चात यह कम्प्यूटर आधारित या वर्चुअल शिक्षा कहलाने लगी। चौथी पीढ़ी वर्तमान समय में ये इंटरनेट शिक्षा, वेब आधारित या ऑनलाइन शिक्षा के रूप में जानी जाने लगी। सवाल ये है कि, ऑनलाइन शिक्षा क्या है? ऑनलाइन शिक्षा पढ़ाई का एक नया डिजिटल तरीका है, जिसमें छात्र घर बैठे पढ़ाई कर सकते है। ऑनलाइन शिक्षण शिक्षा की एक ऐसी प्रणाली है, जिसके जरिए छात्र इंटरनेट के माध्यम से घर बैठे अपने इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे कम्प्यूटर, लैपटॉप, स्मार्ट, फ़ोन, टेबलेट आदि के उपयोग से ऑनलाइन पढ़ाई कर सकते है।

2. ऑनलाइन शिक्षा एक स्वर्णिम अवसर

यदि आज के शैक्षिक परिदृश्य पर एक दृष्टि डाली जाए, तो हम देखते है कि ऑनलाइन शिक्षा पद्धति कोविड19 के संकट के दौरान शिक्षा क्षेत्र में एक अच्छे विकल्प के रूप में सामने आ रही है। साथ ही इसके बुनियादी ढांचे में और सकारात्मक परिवर्तन देखे जा रहे है। इस बदलते वैश्विक पारिदृश्य में हर रोज नई सम्भावनाओं का विकास हो रहा है।

ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से शिक्षकों को **डिजिटल तकनीकी से जुड़ने का स्वर्णिम अवसर** मिल रहा है। वह अपनी रचनात्मक शिक्षा को छात्रों तक व्हाट्सअप, पी0डी0एफ0, लिंक, वीडियो, ऑडियो और सोशल प्लेटफार्म के माध्यम से पहुंचा रहा है। छात्रों के लिए शिक्षा के बेहतर अवसर मिल रहे है। क्योंकि वह लगातार शिक्षकों से संवाद, कर पर रहा हैं, उनके लेक्चर को सुन, समझ कर ज्ञान प्राप्त कर पाने के अवसर के लाभ ले रहा हैं, उनके लेक्चर को सून, समझ कर ज्ञान प्राप्त कर पाने के अवसर के लाभ ले रहे है। ऑनलाइन शिक्षा की सुलभता से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर भी बढ़ गया है, क्योंकि दूर दराज ग्रामीण इलाके में भी शिक्षा को पहुंचाने में भी सहायक सिद्ध हो रही है।

ऑनलाइन शिक्षा में **प्रशिक्षकों के लिए भी अच्छे अवसर** दिखाई दे रहे है, क्योंकि अपने कार्य को प्रभावशाली बनाने के लिए उनकी अधिक भागीदारी वेबिनार के माध्यम से नित् नए नए नवाचारों से परिचित हो रहे है। ये शिक्षा, शिक्षा की लगत को कम करने का भी अवसर प्रदान कर रही है। क्योंकि आवागमन के साधन, स्कूल यूनिफार्म, कॉपी किताब का खर्च, फीस आदि अनेक खर्चे बच जाते है। ऑनलाइन शिक्षा से शिक्षक और छात्र दोनों को **राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षाविदों से साक्षात् जुड़ने का भी अवसर** प्राप्त होता है, जिसमें लोगो के साथ संवाद, सुनना, देखना, समझना और वर्चुअल माध्यम से उपस्थित होने का सुनहरा अवसर मिल जाता है। यह शिक्षा छात्रों को स्वतः सिखने का अवसर भी देती है।

ऑनलाइन शिक्षा द्वारा **शैक्षिक गतिविधियों की निगरानी करने के भी सरल अवसर** प्राप्त हो रहे है, हम घर पर बैठे ही समस्त कार्यो की निगरानी कर सकते है। आज कल सभी छात्र–छात्राए ऑनलाइन परीक्षा दे रहे है। इस शिक्षा से समय प्रबंधन करना भी छात्र सीख जाते है जो उनके लिए बहुत आवश्यक होता है, यानी हम कह सकते है कि ऑनलाइन शिक्षा समय **प्रबंधन की कुशलता का भी अवसर** प्रदान करती है। ऑनलाइन शिक्षा छात्रों और शिक्षकों को **सांस्कृतिक गतिविधियों में सहभागिता का भी अवसर** प्रदान करने में भी पीछे नहीं, अभी हाल में ही हम सभी ने घर बैठे ही अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, शिक्षक दिवस, गाँधी जयंती आदि को सोशल प्लेटफार्म पर ही मनाया है। यह शिक्षा तमाम सम्भावनाओं के नए–नए द्वारा खोल रही है।

शैक्षिक कार्य में संलग्नता के नए–नए अवसर भी मिल रहे है। ऑनलाइन शिक्षा आदर्श नहीं कही जा सकती पर उसके उपयोग को एक अवसर के रूप में ग्रहण करने की मज़बूरी का एक सकरात्मक दिशा दे सकता है, अनेक समस्याओं से जूझती शैक्षिक संस्थाओं के सामने ऑनलाई शिक्षा एक बेहतर अवसर के रूप में देखने को मिल रही है। क्योंकि लालफीताशाही, कानूनी हस्तक्षेप के चलते अधिकांश शिक्षा संस्थाए कई वर्षों से लगातार जूझ रही है। ऐसे में ऑनलाइन शिक्षा एक अच्छा अवसर है ई–आचार्य और ई–विद्वान जैसी सुविधाए भी ऑनलाइन शिक्षा में एक बेहतर अवसर उपलब्ध करा रही है। ये उच्च शिक्षा का परिदृश्य बदल रही है शोध शुद्धि साहित्यिक जाँच करने वाला सॉफ्ट वेयर है, जो विश्वविद्यालय को उपलब्ध कराया जाता है। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी से पुस्तक लेना सरल हो गया है। इन सुविधाओं का हिंदी, अंग्रेज़ी और क्षेत्रिय भाषाओं में भी उपलब्ध करना और निरन्तर अद्यतन करते रहना जरूरी है।

आई0आई0टी0 बैंगलोर के **प्रो0 श्रीधर ने (O.R.F.)** के वेबिनार **में कहा था कि ऑनलाइन कोर्स के विस्तार के पीछे एक आर्थिक तर्क भी है,** ऑनलाइन शिक्षा के तमाम प्लेटफार्म कोर्स बहुत कम ख़र्चीले होते है, इन प्लेटफार्म पर बहुत से कॉलेज और विश्वविद्यालय के छात्र पढ़ाई करते है। भारत के लिए यह अच्छा अवसर होगा वो इस महामारी से मिले अवसर का लाभ उठा कर ऑनलाइन शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाए ताकि देश के शिक्षा संस्थान इस आपदा द्वारा दिए गए लम्बी अवधि के अवसर को पहचान कर उसका लाभ उठाए।

ऑनलाइन शिक्षा **पर्यावरण को भी बचने का अवसर** प्रदान करती है। क्योंकि यहा जानकारी को किताब के बजाए वेब आधरित ऐप एवं पोर्टल पर स्टोर किया जाता है। जिसमें कागज के निर्माण हेतु पेड़ों की कटाई पर रोक लगती है और हमारे पर्यावरण को बचाने में मदद मिलती है। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से समाज के संवेदनशील वर्ग (दिव्यांग, महिलाए, गरीब) तक शिक्षा की पहुंच सुनिश्चित होने का अवसर भी प्राप्त होता है, जिससे सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलता है।

ऑनलाइन शिक्षा की सहायता से **सकल नामांकन दर (जी0इ0आर0) में भी तीव्र वृद्धि होने की सम्भावना है।** उच्च शिक्षा में सकल नामांकन दर 2017–2018 की तुलना में वर्ष 2021 तक 24.7% से बढ़कर 30% तक करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 में ऑनलाइन शिक्षा पर जोर के कारण यह ऑनलाइन **शिक्षा उसके लिए एक पूर्व तैयारी का अवसर** प्रदान करने का का कार्य कर रही है। इस नीति की मुख्य बात यह है इससें ऑनलाइन टीचिंग और लर्निंग पर जोर देने की बात कही गई है।

3. ऑनलाइन शिक्षा की मुश्किलें

24 मार्च कोविद 19 के रोकथाम के लिए जब देशभर में बंदी लागू कर दी गई तो उसके तुरंत बाद राज्यों की सरकारों ने स्कूली शिक्षा को ऑनलाइन करने का प्राविधान शुरू कर दिया, इनमे एन जी ओ फाउंडेशन, निजी क्षेत्र की तकनिकी शिक्षा कंपनियों को भी भागीदार बनाया गया। इन सबने मिल कर शिक्षा प्रदान करने के लिए संवाद के सभी उपलब्ध माध्यमों के इस्तेमाल शुरू किया इसमें डी0टी0एच0 चैनल, रेडियो प्रसारण, व्हाट्सप ग्रुप , एस, एम, एस, प्रिंट मिडिया, सोशल प्लेटफार्म, विडिओ, ऑडिओ, आदि के भी सहारा लिया गया। ताकि घर बैठकर भी छात्र अध्यन कर सके।

ऑनलाइन शिक्षा के बारे मे तमाम विशेषज्ञ जैसे की आई0आई0टी0 बॉम्बे के **प्रोफेसर सहाना मूर्ति** का ये मानना है कि आमने सामने कि पढ़ाई से अचानक ऑनलाइन माध्यम में स्थानांतरित होने से शिक्षा का स्वरूप बिलकुल ही बदल गया है। ऑनलाइन शिक्षा की ओर बढ़ने की आधी–अधूरी तैयारी के बीच ऑनलाइन शिक्षा के मार्ग में अनेको मुश्किलें है। मुख्य मुश्किलों में **दो मुश्किलें** सबसे महत्वपूर्ण हैं। **पहली मुश्किल** सभी छात्रों के पास इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध नहीं हैं। **दूसरी मुश्किल** सभी के पास ऑनलाइन उपकरण जैसे मोबाइल फोन, लेपटॉप, कम्पूटर आदि मौजूद नहीं है। इन दोनों की मदद से ही ऑनलाइन पढाई की जा सकती है। नेशनल सैंपल सर्वे शिक्षा से जुडे 75वे चरण के आंकडे बताते है कि देश में केवल 24% के पास ही इंटरनेट सर्विस है। इनमें 42% शहरी क्षेत्र में 15% ग्रामीण क्षेत्र में इंटरनेट प्रयोग करते है। वही देश में केवल 11% घरो में अपने कंप्यूटर हैं, जिनमें से 23% शहरी और 4.4% ग्रामीण घरों में अपने कंप्यूटर है। इसमें स्मार्ट फोन शामिल नहीं है। आई0ए0एम0ए0आई0 (IAMAI) की **ताजा रिपोर्ट** के अनुसार भारत में लगभग इस समय 50 करोड़ इंटरनेट यूजर है जिन में से 42 करोड़ 12 वर्ष की आयु से अधिक के है।

65% पुरूष इंटरनेट यूजर है। ग्रामीण शहरी पुरूष व महिलाओ के बीच इस डिजिटल अंतर को अन्य बड़े विश्वविद्यालय सर्वे भी सही बताते है। **हैदराबाद विश्वविद्यालय के सर्वे** के अनुसार 37% छात्रों ने कहा की वे ऑनलाइन क्लास ले सकते है जबकि 90% छात्रों ने क्लास लेक्चर पर जोर दिया। यहां तक कि देश के बड़े तकनीकी संसथान आई0आई0टी0 के 10% या इससे भी अधिक छात्रों ने कहा कि स्टडी मटीरियल को डॉउनलो नहीं कर सकते। छात्रों ने इसकी वजह कभी कनेक्टविटी की कमी और कभी अपर्याप्त डाटा प्लान बताया।

रैंकिग एजेंसी क्वाक्वारेली सायमंडस (QS) के ताजे सर्वे रिपोर्ट को उनके क्षेत्रीय निदेशक डॉ अश्विन फर्नाडीस ने (ORF) के एक वेबिनार में प्रस्तुत किया इस सर्वे में दिखाया गया था कि, इसमें शामिल 7500 से अधिक छात्रों में से 72. 6% छात्र इंटरनेट के इस्तेमाल के लिए मोबाइल के हॉट–स्पॉट का प्रयोग करते है जबकि UNESCO इंटरनेट के इस माध्यम को खराब तकनीकी का कहता है। 15.87% छात्र के पास ब्राडबैंड की सुविधा थी। मगर इन छात्रों ने बताया कि कनेक्टविटी की समस्या रहती है,, कभी बिजली नहीं रहती, सिग्नल नहीं आता। हॉट–स्पॉट वालो को भी ये समस्याए झेलनी पड़ती है। अब अगर इन आकड़ो के हिसाब से देखा जाए तो 30% भारतीय आबादी के पास ही स्मार्ट फोन कि सुविधा है, तो आपको पता चलेगा कि देश का एक बहुत छोटा हिस्सा स्मार्ट फोन का प्रयोग करता है। सबसे अच्छी पहुंच वाली तकनीकी यानी टी0वी0 का इस्तेमाल करना भी शिक्षा के लिए एक समाधान नहीं है। क्योंकि देश के केवल 67% घरों में ही टी0वी0 है। आज टी0वी0, लैपटॉप, स्मार्ट फोन का आपस मे साझाा करने का विकल्प भी अपनाने जा रहे है, लेकिन यदि एक भी छात्र शिक्षा के दायरे से वंचित रह जाता है तो उसके साथ नांइसाफी होगी।

''अगर एक भी बच्चा शिक्षा से वंचित रह जाता है, तो पढ़ाई का ये माध्यम अन्यायपूर्ण होगा। केंद्र और राज्य सरकारों को ये प्रतिबद्धता दिखानी चाहिए कि वे आगे चल कर सभी शिक्षण संस्थानों को ब्रॉड–बैंड सेवा और ऑनलाइन शिक्षा के लिए उचित यंत्र मुहैया कराए''

इन दो मुख्य मुश्किलों के आलाव भी अनेको समस्याए है। ऑनलाइन शिक्षा के लिए गुणवत्ता तंत्र और गुणवत्ता बेंचमार्क स्थापित करना भी महत्वपूर्ण है। तकनीकी का असमय फेल होना, इंटरनेट की स्पीड, कनेक्टविटी की समस्या, बिजली की आपूर्ति, शिक्षकों और छात्रों में डिजिटल का कौशलों आभाव, उच्च और निम्न प्रौधोगिकी समाधान आदि की संभावना तलाशना, ऑनलाइन टूल्स की जानकारी न होना, पुस्तकालय का डिजिटल न होना, इ–कंटेंट का उपलब्ध न होना, ग्रामीण इलाके मे रहने वाले छात्रों से पाठ्यक्रय पूरा करना, पाठ्यक्रय में असमानता, निर्बल और अति निर्बल वर्ग से आने वाले छात्र (जो मंहगे उपकरण खरीद नहीं सकते) से सम्बंधित समस्या, शिक्षकों द्वारा इ–कंटेंट तैयार करने का अनुभव न होना डिजिटल माध्यमों का उपयोग न आना आदि अनेक प्रकार की मुश्किलें शिक्षा समुदाय के समक्ष देखने को मिल रही है।

प्रेद्योगिकी का डेमोक्रेटाइजेशन अब एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, जिसमें इंटर नेट कनेक्टिविटी, टेलीकॉम इंफ्रास्ट्रचर, ऑनलाइन सिस्टम की छमता, लैपटॉप, डेस्कटॉप की उपलब्धता, साफ्टवेयर, शैक्षिक उपकरण्ण, ऑनलाइन मूल्यांकन उपकरण आदि शामिल है। पाठ्यक्रम का प्रयोगात्मक हिस्सा पूर्णतः छोड़ देना उचित नहीं, जो डिजिटल में संभव नहीं। सिर्फ कटेंट

डिलीवरी, प्रश्न बैंक, नोट्स का प्रेषण करना मात्र अध्यापन की इतिश्री समझ लेना ठीक नहीं। हमारे देश मे उच्च शैक्षिक संस्थाओं के मूल्यांकन के लिए जो मूल्यांकन प्रत्यायन परिषद (नेक) है, व संस्थाओं के मूल्यांकन में एक बिंदु यह भी देखती है की अध्यापक द्वारा शिक्षा प्रदान करने में इनफार्मेशन तकनीकी के साधनों का कितना प्रयोग किया जा रहा है? लेकिन वास्तविकता तो ये है की संस्थागत स्तर पर स्मार्ट क्लास, ई–बोर्ड इत्यादि के लिए कोई व्यवस्था नहीं। अध्यापक को इ–कंटेंट तैयार करने का भी कोई अनुभव और प्रशिक्षण नहीं।

ऑनलाइन शिक्षा की सबसे अधिक **मुश्किलें प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर** देखने को मिल रही है। उत्तर प्रदेश, बिहार और दिल्ली के कई **स्कूलों के शिक्षकों का यही कहना है कि, जो खाने के लिए मीड डे मील पर आश्रित है, उनके पास स्मार्ट फोन, इंटरनेट कंहा से आयेगा।** केंद्र और राज्य सरकार ऑनलाइन शिक्षा को लेकर तरह–तरह के दावे कर रही है, तो ऐसे में सरकारी स्कूलों के शिक्षकों का ये कहना है कि ऑनलाइन शिक्षा कम से कम प्राथमिक स्कूलों तक नहीं पहुंच पा रही है। **N.S.O. (नेशनल स्टेटिस्टिक्स ऑफिस)** के देश ब्यापी सर्वे ने भी डिजिटल डिवाइस की तस्दीक की है। इनके अनुसार ग्रामीण इलाको में मात्र 4% घरो में ही कंप्यूटर है, 14.9% के पास ही इंटरनेट है, उनमें से 4.4% को ही कंप्यूटर चलना आता है।

प्राइवेट शहरी क्षेत्र में दूसरी तरह की मुश्किल है। पिछले हफ्ते भर में हुए सर्वे मे 80% अभिवावकों का मानना हे कि बच्चो को लम्बे समय तक स्क्रीन शेयर करने के कारण आंखे खराब हो रही है इन्ही दुष्परिणामों के कारण मध्य प्रदेश, कर्नाटक ने पांचवी तक के छात्रो के लिए ऑनलाइन शिक्षा पर रोक लगा दी है। ऑनलाइन शिक्षा को आज रामबाण के रूप में पेश किया जा रहा है, जिसकी वजह यह है कि आधी–अधूरी समझ उत्पन्न करने वाली शिक्षा को मुनाफा कमाने का धंधा मानने वाली मानसिकता है।

4. निष्कर्ष

हम कह सकते है कि, ऑनलाइन शिक्षा की वृद्वि की भारत में प्रबल सम्भावना है, लेकिन चुनौतियां भी कम नहीं है। जब तक ऑनलाइन शिक्षा में आने वाली मुश्किलों का बेहतर आकलन नहीं किया जायेगा, तब तक अच्छे परिणाम प्राप्त नहीं किये जा सकेंगे। हमारे देश की यदि कुछ नामचीन संस्थाओ को छोड़ दे, तो इन परिस्थितियों में बृहतर भारत के विश्वविद्यालय में ऑनलाइन अध्ययन–अध्यापन के लिए ब्यापक स्तर पर प्रबंध की आवश्यकता है, इसमें समय भी लगेगा, और ब्यय भी होगा पर एक बार जब हम संसाधन विकसित कर लेंगे तो, इसका लाभ लम्बे समय तक परिलक्षित होगा ऐसा करके हम इन चुनौतियों को स्वर्णिम अवसरों मे बदल देंगे।

5. सुझाव

विशेष परिस्थितियॉ सदैव ही अति विशिष्ट निर्णयों की मांग करती रही है। हमारे नीति, अधिकारियों, छात्रों विशेष रूप से शिक्षाविदों के दिमाग में, विचार प्रक्रिया में भरी बदलाव की आवश्यकता है। हर संकाय को धीरे–धीरे प्रौधोगिकी का साथ अपनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए डिजिटल शिक्षा का मॉडल पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था के पूरक के रूप में हमारे सामने आ चूका है। किन्तु, समग्र शिक्षा व्यवस्था जैसे प्रवेश, पढ़ाई, परीक्षा एवं मल्यांकन भी डिजिटल माध्यम से पूरा करना अभी भी एक बड़ी चुनौती है। वास्तव में यही वो तत्व है जो, पारम्परिक शिक्षा मॉडल का दुरस्त शिक्षा मॉडल एव पत्राचार शिक्षा मॉडल से पृथक करता है। वित्त विहीन संस्थानाओं को अनुदान देने की आवश्यकता है ताकि वे भी ऑनलाइन शिक्षा में सहभागी बन सके। अध्यापको को मौलिक दृश्य श्रब्य ई–कंटेट, विकसित करने में उचित प्रशिक्षण और प्रोत्साहन दिया जाए। उन्हे तकनिकी रूप से नई शिक्षण, डिजिटल माध्यमों का उपयोग करना सिखाया जाए। अध्यापक अपने विषय में विश्व के अन्य विश्वविद्यालय में चल रहे पाठ्यक्रमों से भी अपने छात्रों को अवगत करवा सकता है। और हमारे शिक्षक छात्र राष्ट्रीय विश्व पटल पर चल रहे शिक्षण और नवीनतम शोध संपर्क में आ सकते है।

ऑनलाइन शिक्षा के लिए राज्य और केन्द्र सरकारों को चाहिए की सभी शिक्षण संस्थाओं को अच्छी ब्रॉड–बैंड सेवा, ऑनलाइन पढ़ाई के लिए लैपटॉप, कंप्यूटर उपलब्ध कराय। देश की 2.5 लाख ग्राम पंचायतों को इंटर नेट सेवा उपलब्ध करने वाली योजना 'भारत नेट' 2011 को कार्यान्वित करे। ग्रामीण समुदाय के छात्रों को भी अच्छी ब्रॉड–बैंड सेवा से जोड़े, ताकि इसका इस्तेमाल न केवल शिक्षा के लिए, बल्कि स्स्वस्थ सेवा, कृषि , रोजगार, के अन्य मामलो में भी मदद कर सके।

सन्दर्भ

1.उपाध्याय, डॉ प्रतिभा, (2003) भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृतियाँ, शारदा पुस्तक भवन, पृ0सं0 232–236
2.www.ptrika.com
3.www.hindi.theprint.in
4.www.prabhasakshi.com
5.www.franhisemedia.com

6.www.orfonline.org
7.www.pravakta.com
8.www.jagran.com
9.www.sanskritiias.com
10.www.drishiias.com
11.www.supportmeindia.com
12.www.orfonline.org/hindi/research.
13.www.from.livehindustan.com
14.www.shikshavahini.page.article.